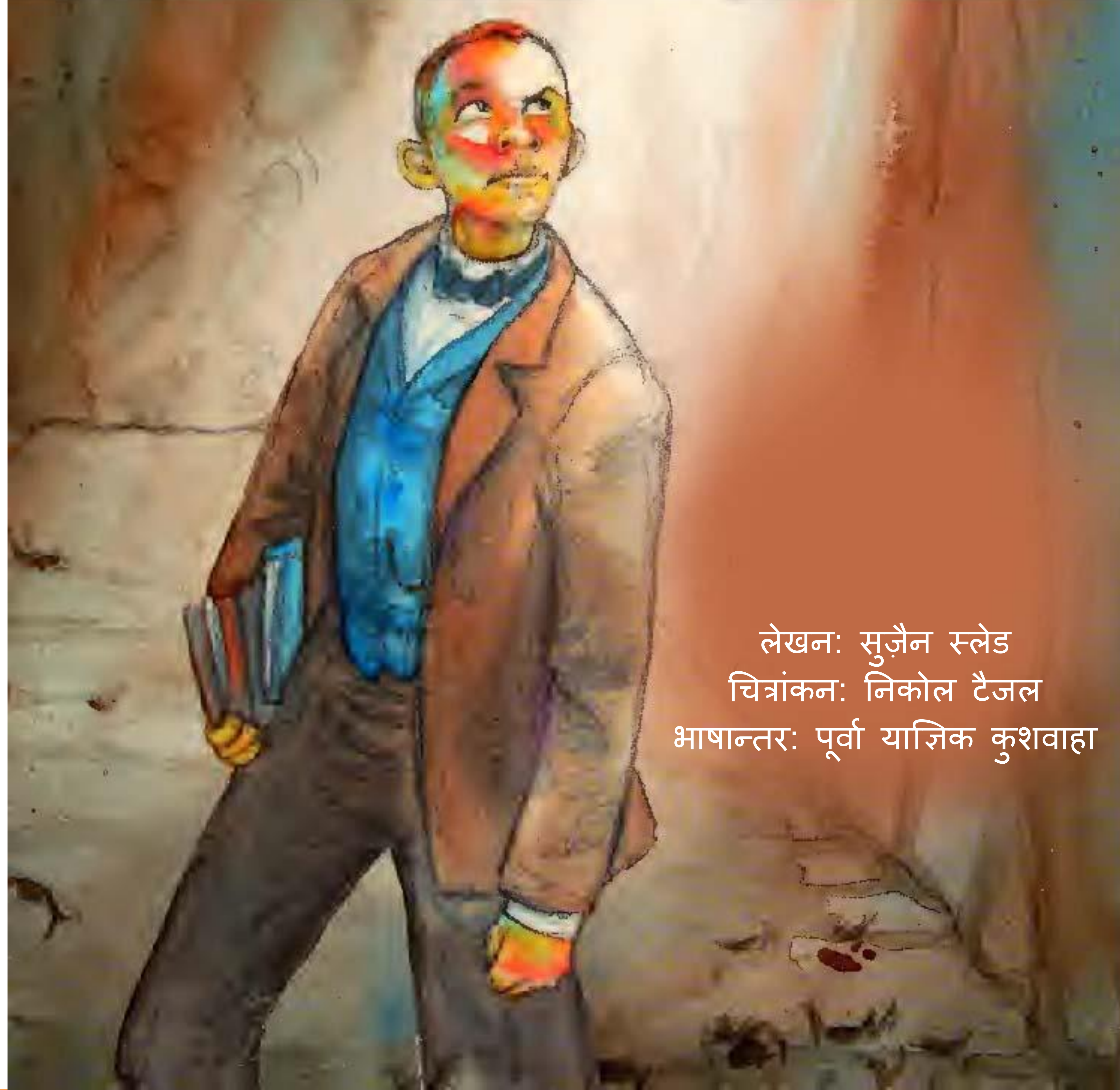


# किताबों और ईंटों से बनाया बुकर टी. वॉशिंगटन ने एक स्कूल



लेखन: सुज़ैन स्लेड  
चित्रांकन: निकोल टैजल  
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अपने सपनों को कभी न तजो!

बुकर टी. वॉशिंगटन स्कूल में पढ़ना चाहता था। एक काले गुलाम के रूप में अमरीका में पैदा होने के कारण बुकर अपने बचपन में स्कूल जा नहीं सकता था। सो उसने खुद को आखर बूझ, पढ़ना सिखाया।

अमरीका में नागरिक युद्ध समाप्त होने पर जब गुलाम आज़ाद कर दिए गए बुकर को भी आखिरकार स्कूल जाने का और तब शिक्षक बनने का मौका मिला। बाद में वे अलबामा के एक छोटे-से कस्बे टस्कीजी गए ताकि वहाँ के बच्चों को पढ़ा सकें।

टस्कीजी पहुँचने पर उन्होंने पाया कि स्कूल चलाने के लिए जो खस्ताहाल खलिहान उपलब्ध था उसकी छत में सुराख हैं। उसमें न तो खिड़कियाँ थीं न दरवाज़ा! बुकर क्या करते? उपाय एक ही था, खुद एक स्कूल भवन बनाना।

लेखिका सुज़ैन शैल्ड और चित्रकार निकोल टैजल की यह सचित्र किताब अमरीका के सबसे महान शिक्षाविदों में एक की जीवन गाथा प्रस्तुत करती है, जिसने अपने हाथों से ईंट दर ईंट चिन कर स्कूल भवन को खड़ा किया।





किताबों और ईंटों से बनाया  
बुकर टी. वॉशिंगटन ने एक स्कूल



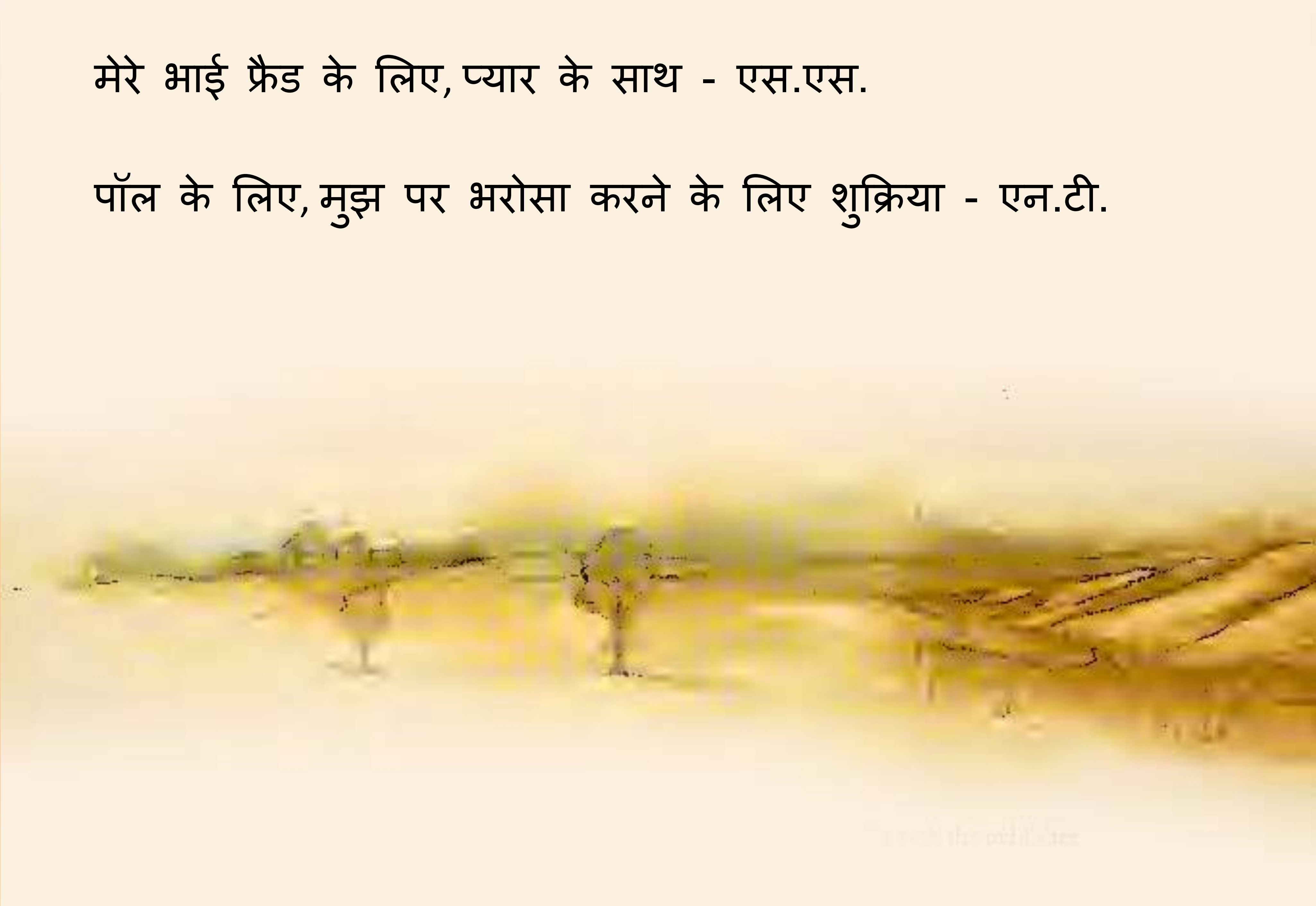
लेखन: सुज़ैन स्लेड  
चित्रांकन: निकोल टैजल  
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सूरज उगने से लेकर उसके ढलने तक बुकर हाड़-तोड़ मशक्कत करता था। वह खेतों में पानी ले जाता था। पिसाई मिल तक मक्की ढोता था। अहाते से पत्थर हटाता था।

मेरे भाई फ्रैंड के लिए, प्यार के साथ - एस.एस.

पॉल के लिए, मुझ पर भरोसा करने के लिए शुक्रिया - एन.टी.



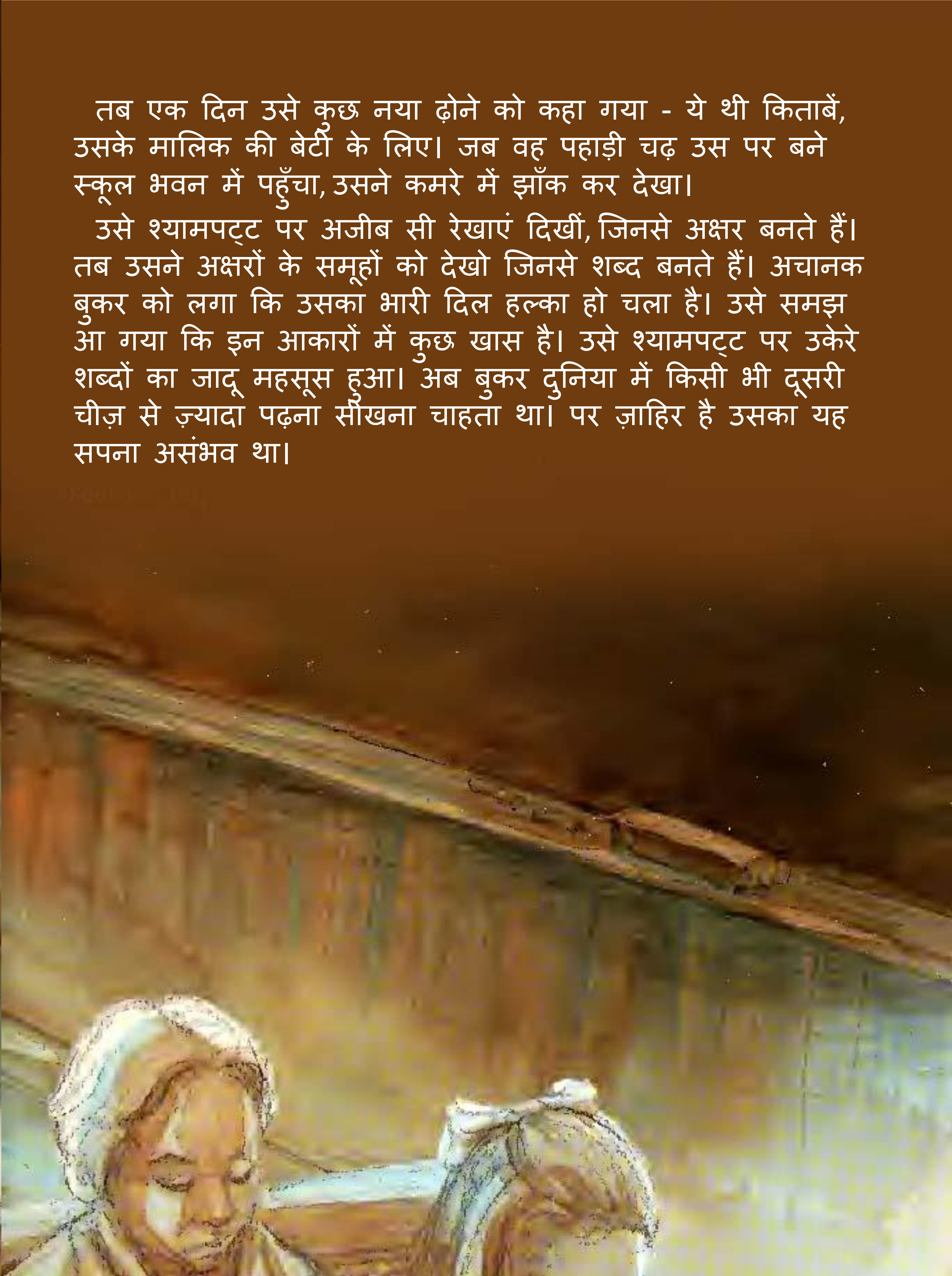
बुकर पूरे दिन भारी दिल से भारी बोझ ढोया करता था क्योंकि वह गुलाम था।



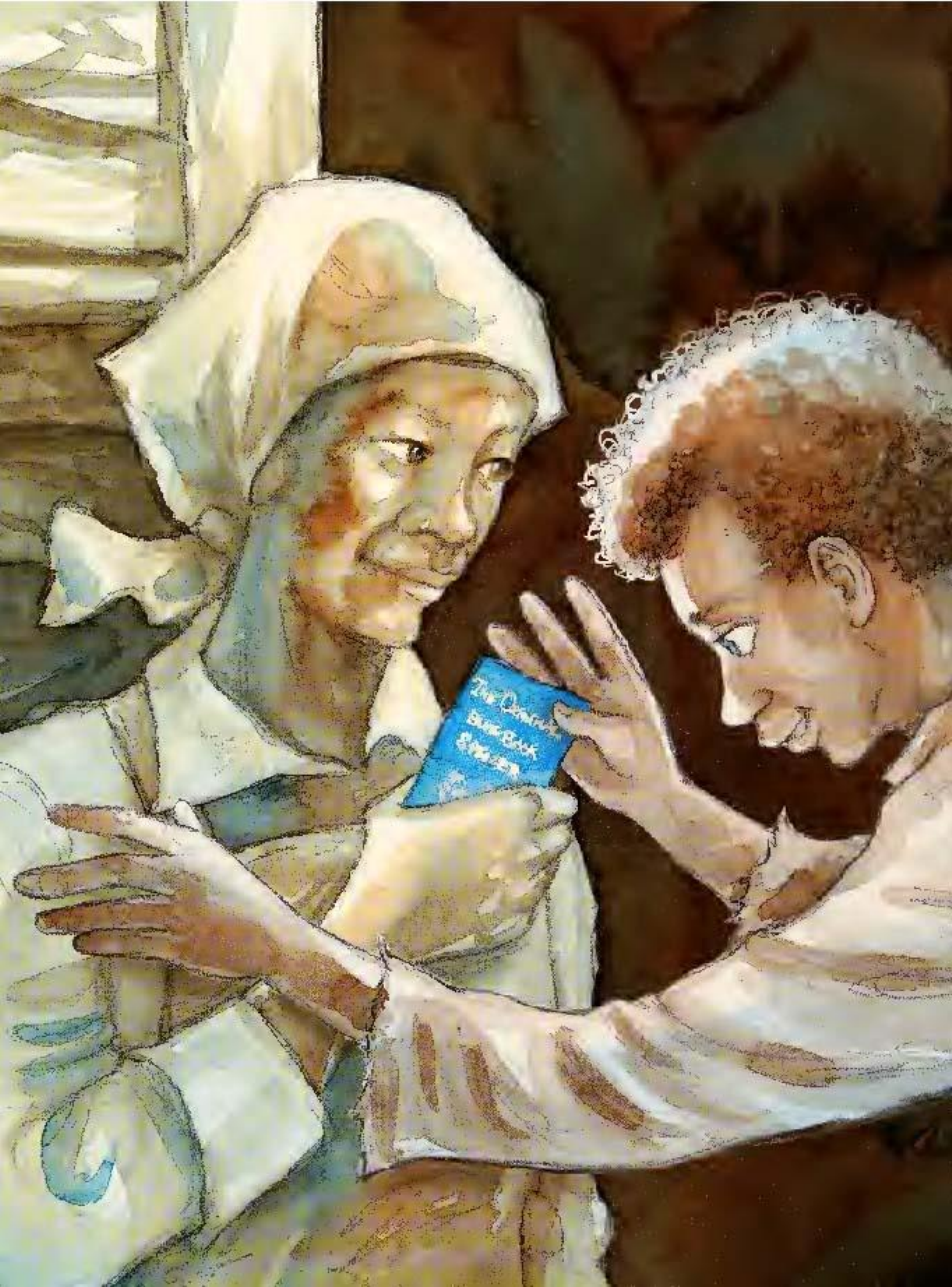


तब एक दिन उसे कुछ नया ढ़ोने को कहा गया - ये थी किताबें, उसके मालिक की बेटी के लिए। जब वह पहाड़ी चढ़ उस पर बने स्कूल भवन में पहुँचा, उसने कमरे में झाँक कर देखा।

उसे श्यामपट्ट पर अजीब सी रेखाएं दिखीं, जिनसे अक्षर बनते हैं। तब उसने अक्षरों के समूहों को देखो जिनसे शब्द बनते हैं। अचानक बुकर को लगा कि उसका भारी दिल हल्का हो चला है। उसे समझ आ गया कि इन आकारों में कुछ खास है। उसे श्यामपट्ट पर उकेरे शब्दों का जादू महसूस हुआ। अब बुकर दुनिया में किसी भी दूसरी चीज़ से ज़्यादा पढ़ना सीखना चाहता था। पर ज़ाहिर है उसका यह सपना असंभव था।







जब बुकर नौ साल का हुआ गुलामी के मसले पर लड़ाई खत्म हो गई। अमरीका का गृहयुद्ध समाप्त हो चुका था। सभी गुलाम आज़ाद किए जा चुके थे। पर बुकर को इस आज़ादी का अहसास नहीं हो रहा था। उसे अब भी नमक की खदान में घंटों मशक्कत करनी पड़ती थी ताकि किसी तरह परिवार का गुज़ारा चल सके। साथ ही उसके आस-पास के जितने भी स्कूल थे वे गोरों के लिए थे।

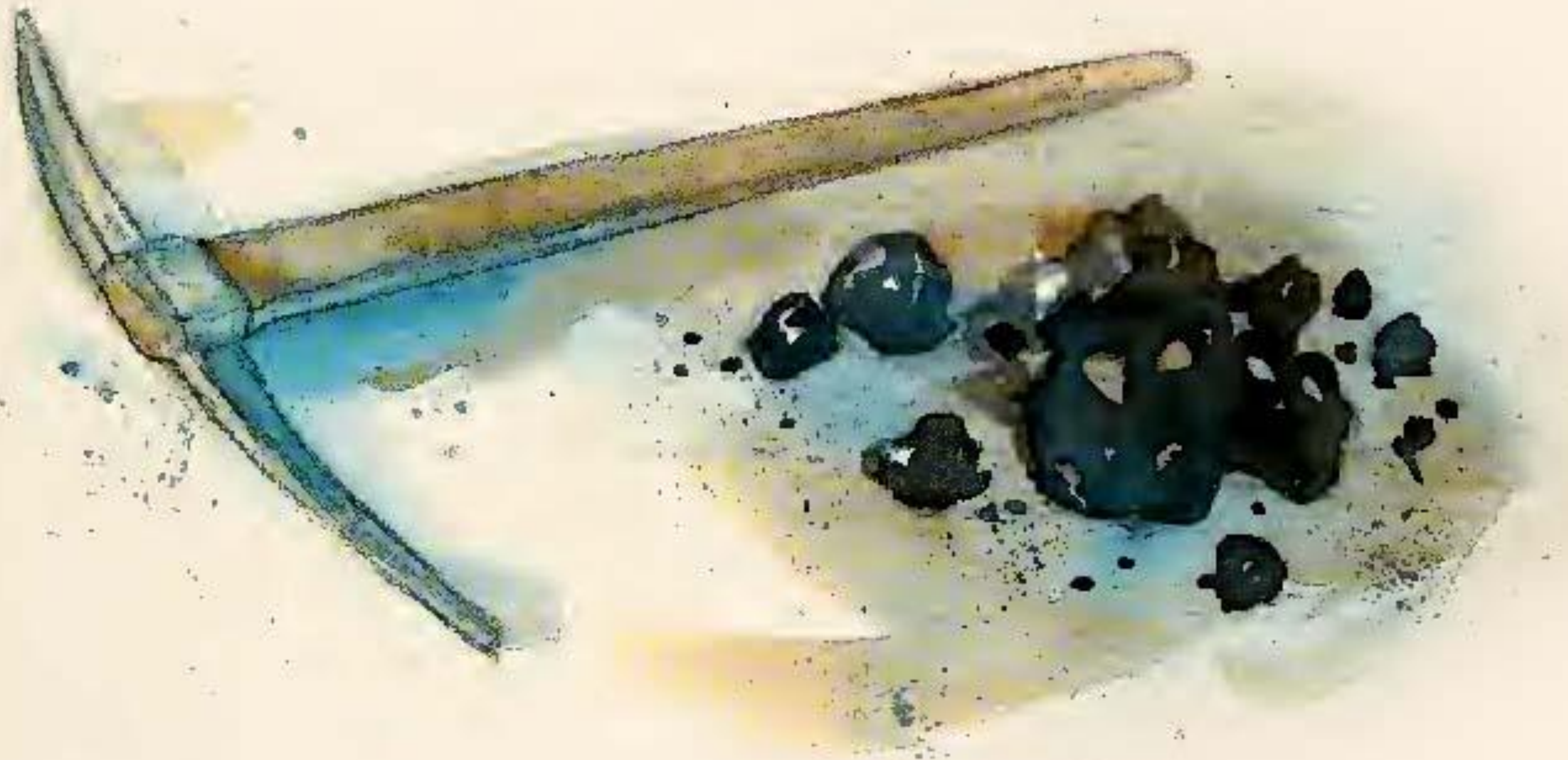
सो बुकर ने अपनी माँ से चिरौरी की ताकि उसके पास खुद की एक किताब हो। और जैसा अक्सर माँओं के साथ होता है, एक करिश्मा हुआ। जेब में फूटी कौड़ी न होने के बावजूद माँ ने बुकर के लिए वैबस्टर की हिज्जों की किताब जुगाड़ दी। बुकर उन आकारों को ध्यान से देखने लगा जिन्हें अक्षर कहते हैं। उसने अक्षरों के उन समूहों को सीखा जिनसे शब्द बनते हैं। उसने खुद को पूरी लगन से पढ़ना सिखाया। पर उसके लिए यह नाकाफी था, उसे और सीखना था।





इसके बाद बुकर कोयले की खदान में काम करने लगा। वह दिन भर कोयले की बड़ी चट्टानों को खोदता। पर खोदते-खोदते एक ही बात सोचता - स्कूल की। एक दिन पूरी खदान में एक फुसफुसाहट गूँजी - “काले छात्रों के लिए एक स्कूल है... वर्जीनिया में कहीं...”

बुकर को अपने कानों पर यकीन ही नहीं हुआ। एक स्कूल - उसके लिए!



पर वर्जीनिया पाँच सौ मील दूर था। रेल में सफर करने के पैसे उसके पास थे नहीं। न किताबों के लिए पैसे थे। सो बुकर काम करता रहा, पैसे बचाता रहा, और स्कूल में पढ़ने के सपने देखता रहा।





कुछ समय और गुज़रा, अंत-तंत बुकर वर्जीनिया पहुँचा। वह पैदल चला और जब भी संभव हुआ लोगों से अपने वाहन में कुछ दूर साथ ले जाने की गुज़ारिश करते हुए। आखिरकार सोलह बरस की उम्र में वह अपनी खुद की किताबें ले स्कूल गया। उसने अगले तीन साल में पढ़ाई पूरी की और तब अपने कस्बे में लौटा ताकि वहाँ काले बच्चों को पढ़ा सके। वह उन सबकी मदद करना चाहता था जो उसकी ही तरह सीखने को बेताब थे।

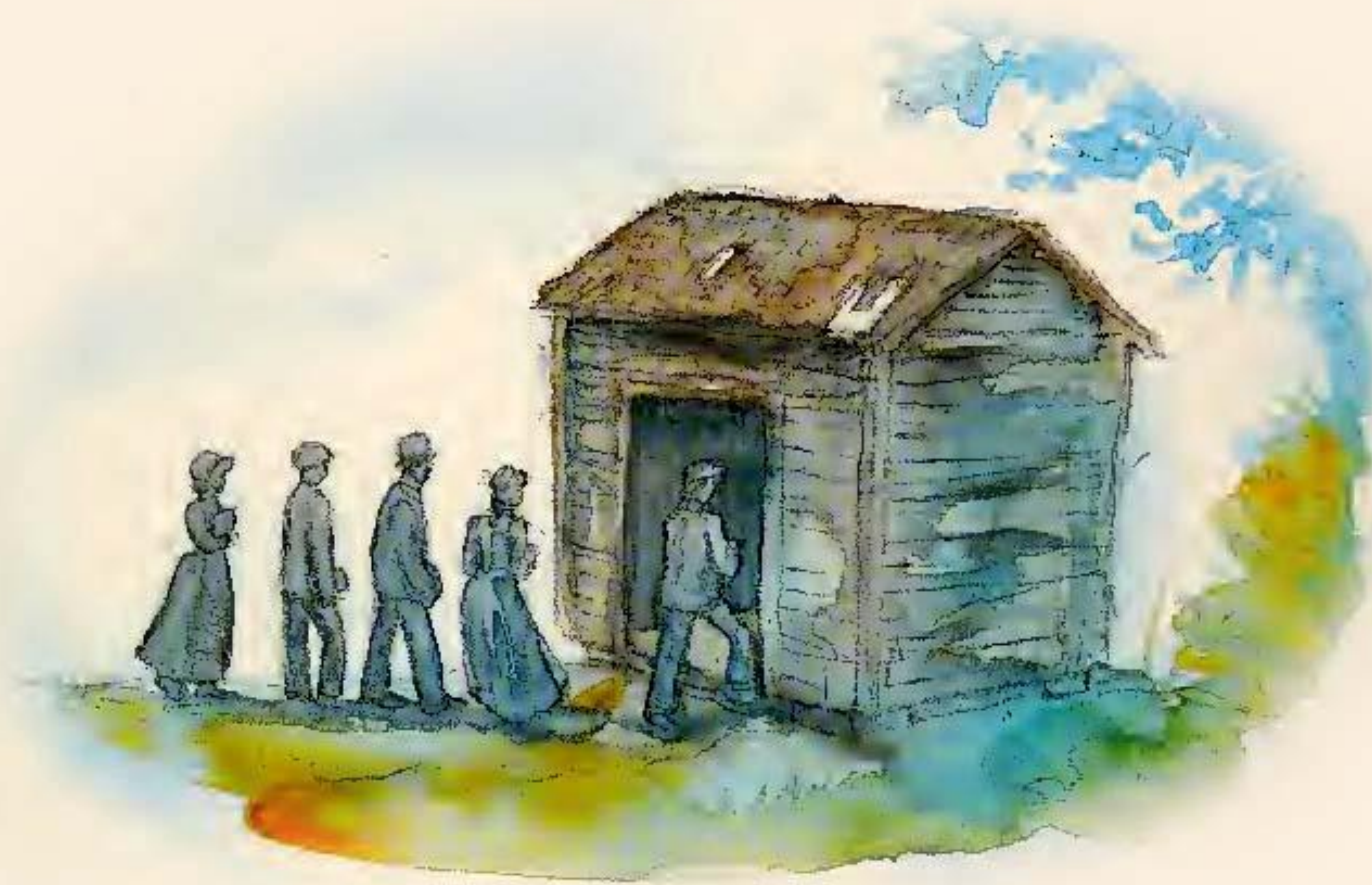


इसके कुछ समय बाद अलबामा के एक छोटे कस्बे ने बुकर को उनके यहाँ आकर बच्चों को पढ़ाने को कहा। बुकर ने अपने कपड़े-लते, किताबें और अपनी घड़ी (जो उसकी सबसे कीमती चीज़ थी) समेटी और टस्कीजी की हरी-भरी पहाड़ियों में जा पहुँचा। वहाँ उसे पढ़ने को आतुर छात्र तो बहुतेरे मिले, पर स्कूल चलाने के लिए कोई ईमारत नहीं! वह पूरे कस्बे में घूमा जब तक उसे एक खस्ताहाल खलिहान न मिल गया। उसमें न खिड़कियाँ थीं, न दरवाज़ा, और छत में बड़े सुराख थे। पर यही अकेली जगह उपलब्ध थी!





जल्द ही टस्कीजी कस्बा बुकर के स्कूल के बारे में बातें करने लगा। स्कूल के पहले ही दिन दर्जनों छात्र-छात्राएं दाखिले के लिए कतार में खड़े थे। वे उस छोटी-सी जगह में दब-सिकुड़ कर समा गए। इधर सप्ताह दर सप्ताह स्कूल में भीड़ बढ़ने लगी। जब बरसात होती तो बारी-बारी से छात्र बुकर के सिर पर छाता तान खड़े होते, ताकि वे पढ़ाते जा सकें।



बुकर जानते थे कि उनके छात्रों को एक ईमारत की सख्त ज़रूरत है। अपने एक स्कूल की ज़रूरत है। सो बुकर ने ठाना कि वे उसे खुद ही बना लेंगे - एक-एक ईंट जोड़ कर!







बुकर ने पैसे उधार लिए और पास ही एक बेकार पड़े खेत को खरीद लिया। उसकी बीस एकड़ ज़मीन को साफ किया।

तब आया मुश्किल काम - इमारत के लिए ईंटों का बन्दोबस्त जो करना था। कस्बे में कोई ईंटभट्टा नहीं था। बुकर ने तय किया कि वह खुद ही ईंटें बनाएंगे। उन्होंने किताबों में अलग-अलग तरह की मिट्टी के बारे में पढ़ा। यह भी कि साँचों की मदद से ईंटें कैसे बनाई जाती हैं, उन्हें भट्टे में कैसे पकाया जाता है। उन्होंने पढ़ा कि ईंटों को चिन कर मज़बूत ऊँची दीवारें कैसे खड़ी की जाती हैं।



जल्द ही बुकर और उनके छात्र  
चिकनी मिट्टी के लिए ज़मीन खोदने  
लगे। उन्होंने घंटों खुदाई की। दिनों-  
दिन लगातार खुदाई की। पर ईंटों के  
लिए सही चिकनी मिट्टी न मिली।



उन्होंने गड्ढे खोदे।  
तब और बड़े गड्ढे खोदे।



पर चिकनी  
मिट्टी नदारद  
थी।

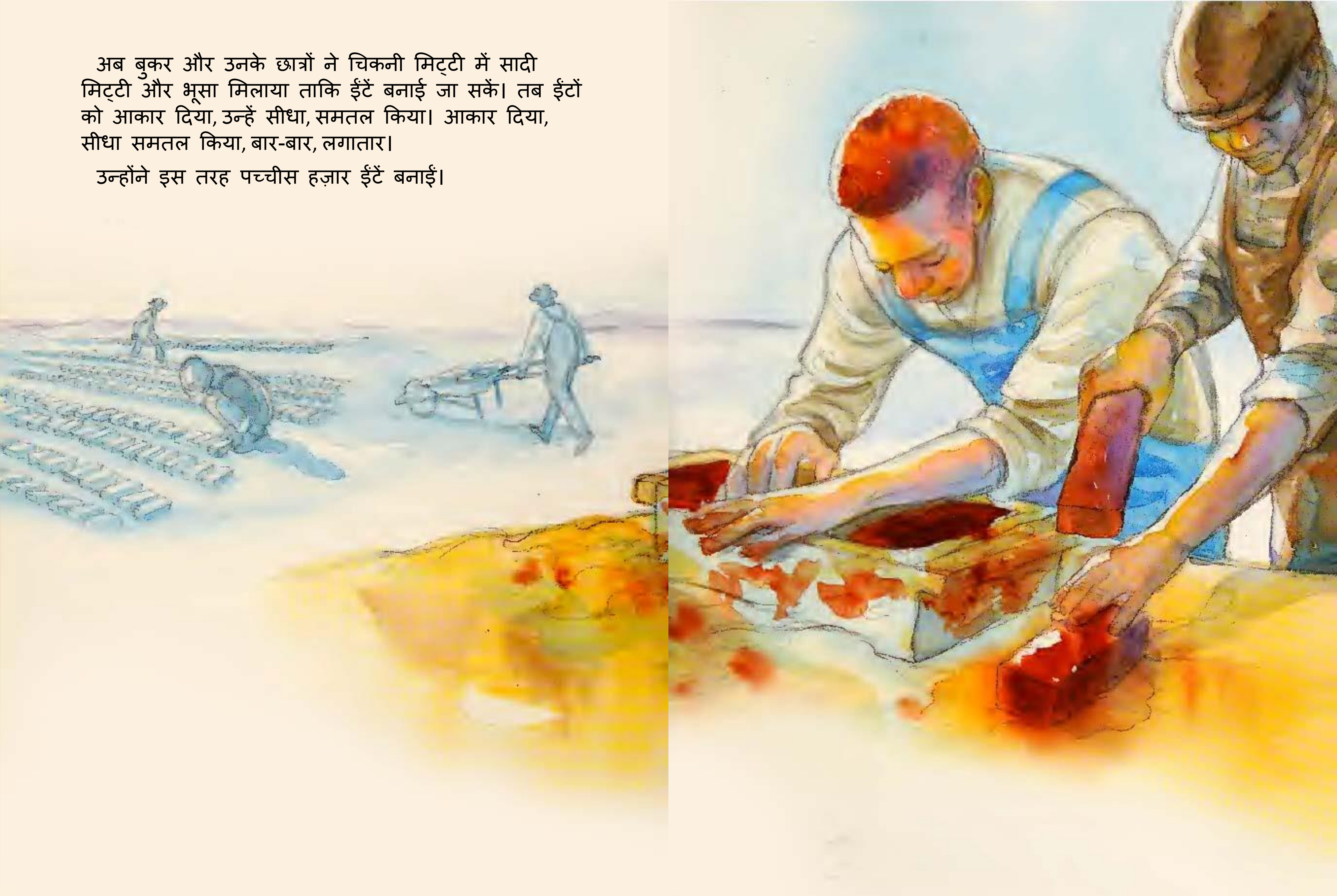


बुकर के हाथों में छाले पड़ गए। उनकी कमर दुखने लगी।  
वे मिट्टी में पूरी तरह सन गए, उनके घुटनों पर मिट्टी जम  
गई। पर वे खोदते गए, तब तक जब तक अलबामा की  
बढ़िया लाल चिकनी मिट्टी उनके हाथ न लग गई।



अब बुकर और उनके छात्रों ने चिकनी मिट्टी में सादी मिट्टी और भूसा मिलाया ताकि ईंटें बनाई जा सकें। तब ईंटों को आकार दिया, उन्हें सीधा, समतल किया। आकार दिया, सीधा समतल किया, बार-बार, लगातार।

उन्होंने इस तरह पच्चीस हजार ईंटें बनाईं।







इसके बाद बुकर ने एक विशाल भट्टी बनाई। उसमें हजारों कच्ची ईंटें डालीं। आग लगा उसे तब तक हवा दी जब तक भट्टी लाल न हो गई। गीली ईंटें छनछना उठीं, पर तब अचानक भट्टी ही तड़क गई। सारी ईंटें बेकार हो गईं।

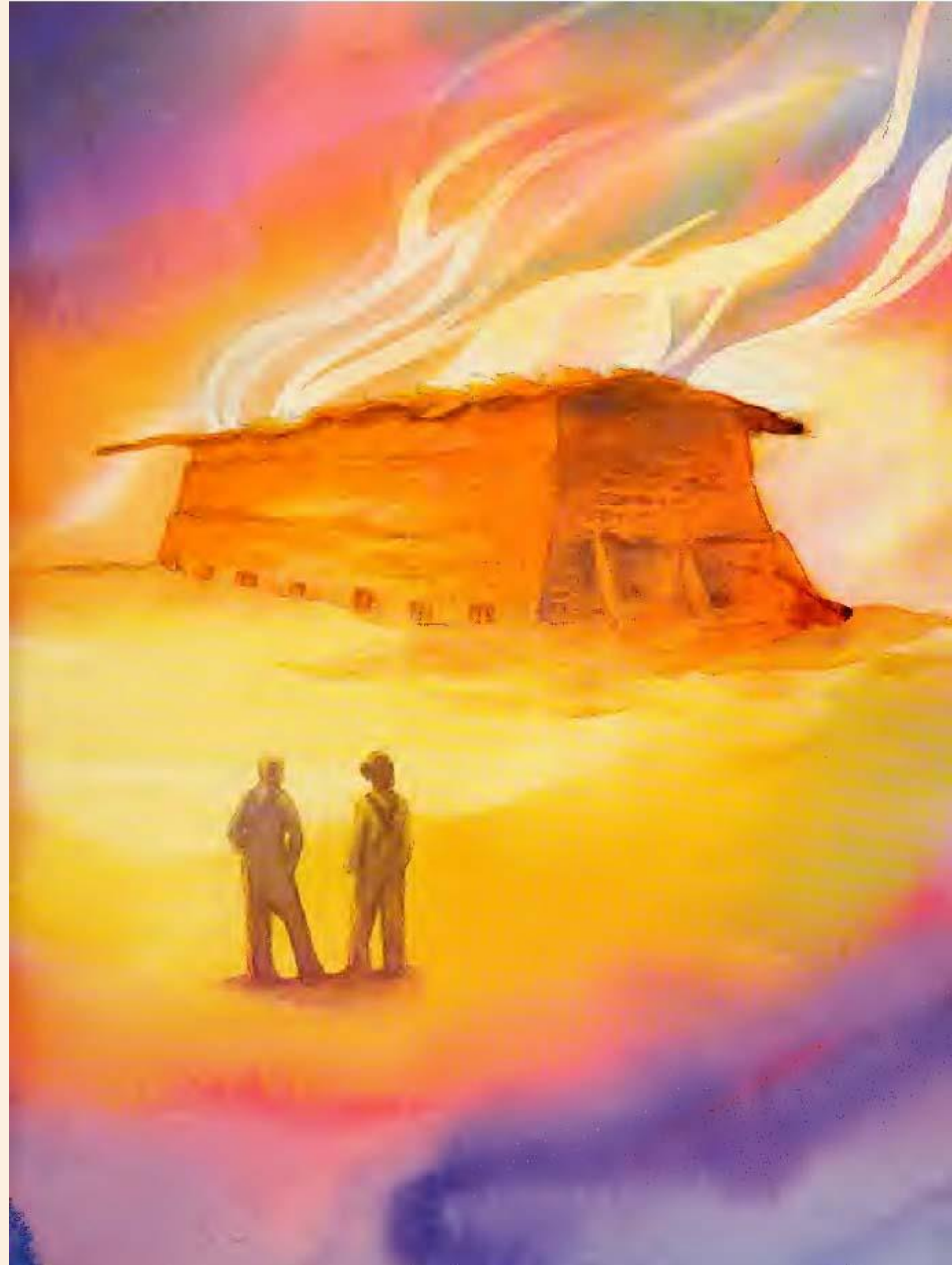
छात्रों ने तब और भी हजारों ईंटें बनाईं। बुकर ने दूसरी भट्टी तैयार की। पर वह भी टूट गई। छात्र थक चुके थे। वे काम बन्द कर देना चाहते थे। पर बुकर हार मानने को तैयार न थे। दूसरे शिक्षक इस थके समूह की मदद को आए। उन्होंने एक तीसरी भट्टी बनाने में मदद की। पर सप्ताह भर जलने के बाद वह भी नाकाम रही।

नई भट्टी बनाने के अब पैसे न थे। साथी शिक्षकों ने सलाह दी कि बुकर ईंटें बनाने की बात भूल जाए। अपना समय जाया न करे।  
समय!





बुकर को अपनी बेशकीमती घड़ी याद आई। उन्होंने तय किया कि वे उसे ही बेच देंगे ताकि एक और भट्ठी बनाने के लिए पैसे जुगाड़ सकें। किस्मत से इस भट्ठी ने सही काम किया। आखिरकार बेहद सुन्दर और मज़बूत ईंटें बन सकीं। अब बुकर स्कूल की इमारत बनाने को तैयार थे।







छात्रों ने बड़ी बाल्टियाँ भर-भर गारा बनाया। बुकर ने कन्नी थामी, गारा लिया और उसे सही तरह से सपाट फैलाया। एक के बाद एक ईंटें ठीक से जमाई और चिनी गईं।

जल्दी ही चार दीवारें खड़ी होने लगीं। उनमें खिड़कियाँ लगीं। हथौड़े ठोके जाने लगे।



छात्रों की मदद से एक नई छत तैयार की गई जिससे पानी न रिसता हो। तब बुकर ने एक बढ़िया दरवाज़ा लगाया - ताकि उस खोल कर सबका स्वागत किया जा सके।





और-और छात्र आते रहे। बुकर और कमरे जोड़ते रहे।  
चिकनी मिट्टी के लिए खुदाई करते रहे। ईंटें गढ़ते रहे।  
उन्हें भट्टी में पकाते रहे। सबकी उंगलियों में और छाले  
पड़े। सबकी थकी पीठों में दर्द होता रहा।



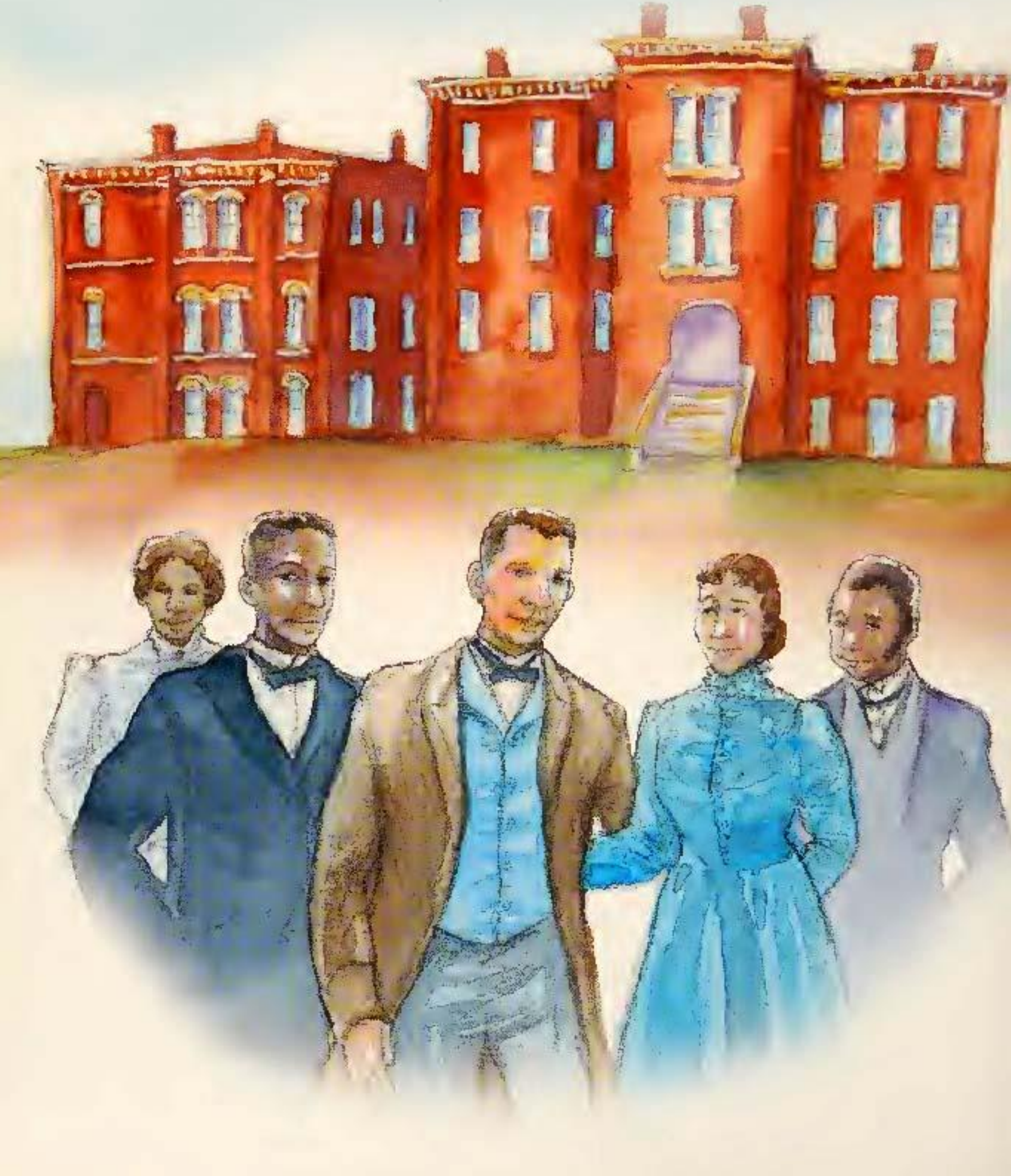
नई ईमारतें तामीर होने लगीं। खाने का कक्ष, गिरजा घर,  
छात्रों के रहने के लिए छात्रावास।



छात्रों ने बची-खुची लकड़ी से कुर्सियाँ, मेजें और पलंग बनाए।  
कपड़े के बोरों में पाइन की सीकें भर बिस्तर बनाए। अब बुकर  
का स्कूल इतना बड़ा था कि जो कोई सीखना-पढ़ना चाहता था  
उसे दाखिला दिया जा सके। उसके मेहनती छात्र आगे चल  
कुशल शिक्षक, व्यापारी, नेता आदि बने।



यह सब इसलिए हो सका क्योंकि बुकर टी. वॉशिंगटन ने  
ईट-ईट जोड़ कर एक अद्भुत स्कूल बनाया था।



सफलता का पैमाना वह ओहदा नहीं जहाँ तक इन्सान  
अपने जीवन में पहुँचा हो, बल्की वे बाधाएं होती हैं जिन्हें  
उसने सफल होते वक़्त लाँघीं हैं।

बुकर टी. वॉशिंगटन



बुकर के बारे में कुछ और

लड़कपन में बुकर सोचता था कि

“स्कूल ही दुनिया की सबसे श्रेष्ठ जगह होती है।”

1865 में जब गुलामी समाप्त हुई बुकर के कस्बे में काले बच्चों के लिए कोई स्कूल नहीं था। कई महीनों बाद एक व्यक्ति उनके कस्बे में आया और उसने काले बच्चों के लिए एक स्कूल की शुरुआत की। अपने सौतेले पिता से मिन्नत-चिरौरी के बाद उसे उस शिक्षक के पास जाने की इजाज़त मिली। पर जल्द ही सौतेले पिता ने बुकर की पढ़ाई बन्द करवा दी। उसे कहा गया कि उसे खदान में काम के घंटे बढ़ाने होंगे ताकि परिवार का गुज़ारा चल सके। तब एक दिन बुकर ने काले छात्रों के लिए खोले गए हैम्पटन नॉर्मल एवं इन्डस्ट्रियल इन्स्टिट्यूट के बारे में सुना, जहाँ काम कर कमाते हुए पढ़ाई की जा सकती थी। पर यह स्कूल 500 मील दूर था। बुकर ने यह दूरी पैदल चल और अजनबियों के वाहनों में कुछ दूर साथ ले जाने की गुज़ारिश कर पार की। बुकर एक छोटे झोले में कुछ कपड़े और जेब में पचास सेंट ले पहुँचा था। रहने की जगह और खाने की एवज़ में उसने चौकीदार की नौकरी तलाशी। स्कूल के प्रिंसिपल ने एक दानदाता की मदद से उसकी फीस भरने की व्यवस्था करवा दी।

1875 में सम्मान के साथ अपनी पढ़ाई खत्म कर बुकर शिक्षक बने। सबसे पहले तो उन्होंने वर्जीनिया के अपने कस्बे मैल्डन में ही काले छात्रों के एक स्कूल में पढ़ाया। तब वे हैम्पटन इन्स्टिट्यूट लौटे और अगले दो वर्षों तक वहाँ पढ़ाते रहे। 1881 में वे टस्कीजी, अलाबामा में एक नया स्कूल शुरू करने गए। 4 जुलाई 1881 को स्कूल खुलते ही 30 विद्यार्थियों ने दाखिला ले लिया (जिनमें आधी लड़कियाँ और आधे लड़के थे)। उनके छात्रों में कुछ तो वयस्क शिक्षक भी थे जो और सीखना-जानना चाहते थे। पहले-पहल बुकर ने अपनी कक्षा एक छोटे-से खस्ताहाल खलिहान



में चलाई। जल्द ही एक और शिक्षिका मिस डेविडसन उनकी मदद के लिए आ गईं। पर महीने के अंत तक वह छोटी-सी जगह पचास छात्रों से ठंसे चुकी थी। बुकर स्कूल के लिए एक नई इमारत बनाने के लिए ज़मीन खोजने लगे। उन्हें पास ही एक बेकार पड़ा खेत मिला। अपने एक पुराने दोस्त से पैसे उधार ले बुकर ने पेशगी जमा करवाई। बकाया कीमत बाद में चुकाने का वादा किया। इस हज़ार एकड़ के खेत में चार ईमारतें थीं - केबिन, रसोईघर, अस्तबल और मुर्गीखाना। बुकर ने इन्हीं कमरों में कक्षाएं शुरू कर दीं, पर साथ ही मज़बूत ईंटों से बने स्कूल भवन का नक्शा भी तैयार किया। नया भवन बनाने के लिए और सामग्री जुटाने के लिए मिस डेविडसन ने कई समारोहों का आयोजन किया।

बुकर के छात्र ईंटें बनाने और उन्हें चिनने के कमरतोड़ काम से परेशान हो गए थे। पर सीखने-सिखाने का बुकर का उत्साह थके हुए छात्रों को प्रेरित करता रहा। हालांकि बुकर अपने छात्रों को गणित, भूगोल और व्याकरण जैसे किताबी विषय भी पढ़ाते थे, पर उनका मानना था कि छात्रों को पेशों से जुड़े कौशल भी सीखने चाहिए ताकि वे अपना गुज़ारा चला सकें। बुकर ने साफ़ किया, “मेरी योजना उन्हें पुराने तरीके से काम करना सिखाने की नहीं है। मैं चाहता हूँ कि वे यह सीख लें कि अपने श्रम में प्राकृतिक शक्तियों - हवा, पानी, भाप, बिजली और अश्वबल से कैसे मदद ली जाए।”

बुकर बाद में प्रसिद्ध वक्ता बने और देश भर में यात्राएं कर शिक्षा संबंधी अपने विचारों को साझा करते रहे। पर वे अपने बनाए स्कूल - टस्कीजी नॉर्मल एण्ड इन्डस्ट्रियल इन्स्टिट्यूट, को कभी नहीं भूले।

1915 में अपनी मृत्यु तक वे इसे सुधारने और विस्तार देने में जुटे रहे। उस वक्त टस्कीजी इन्स्टिट्यूट में सौ ईमारतें और पंद्रह सौ छात्र हो चुके थे। बुकर के कठोर परिश्रम और संकल्प शक्ति से बने इस स्कूल ने साल दर साल हज़ारों ज़िन्दगियों को बदला। उस स्कूल ने जिसे उन्होंने ईंट-ईंट जोड़ कर बनाया था।



## लेखिका की कलम से

इस किताब का खयाल मुझे सालों पहले तब आया जब मैं बच्चों के लिए एक दूसरी किताब की रचना कर रही थी - *वॉशिंगटन टी. बुकर: टीचर, स्पीकर, लीडर*। उस सिलसिले में शोध करते वक्त मैंने उनकी आत्मकथा *अप फ्रॉम स्लेवरी* पढ़ी। मैंने उनके खुद के शब्दों में उस जीवन गाथा को पढ़ा जिसे मैं कई बाल पुस्तकों में पढ़ चुकी थी - दासप्रथा समाप्त होने के बाद कैसे उन्होंने अपनी पढ़ाई का सपना पूरा किया। पर साथ ही मुझे उनके जीवन की कई ऐसी बातों का भी पता चला जिनके बारे में कहीं पढ़ा-सुना न था। किस तरह उन्होंने हाड़तोड़ मशक्कत से एक स्कूल खड़ा किया ताकि दूसरे भी स्कूल जाने के अपने सपने को पूरा कर सकें।

टस्कीजी नॉर्मल एण्ड इन्डस्ट्रियल इन्स्टिट्यूट के निर्माण के दौरान उन्होंने अनेकों चुनौतियों का सामना किया। पर उनसे भी अधिक चुनौतियाँ अगले चौंतीस बरस तक उनके सामने आती रहीं, जिस दौरान उन्होंने स्कूल का नेतृत्व किया। हर महीने जब पिछले महीने के खर्चों को चुकाने का समय करीब आता वे कई रात यह सोचते गुज़ारते कि चुकारा आखिर कैसे किया जा सकेगा। जब सर्दियों में ठिठुराने वाली हवाएं बहतीं, वे कोटों की तलाश में जुटते ताकि उनके छात्र कुछ गरमाहट पा सकें। जब उनके थके छात्रों के पास सोने की जगह न होती वे कपड़े के बोरो में पाइन की सींके भर बिस्तर बनाते। बुकर इन तमाम चुनौतियों के बावजूद जुटे रहे क्योंकि उन्हें अपने छात्र-छात्राओं की परवाह थी। इसलिए क्योंकि वे मानते थे कि वे सब इस लायक हैं कि उनका अपना एक स्कूल हो।



## परिचय

**सुजैन स्लेड** सौ से अधिक बाल पुस्तकों की पुरस्कृत लेखिका हैं, जिसमें *क्लाइम्बिंग लिंकनस् स्टैप्स* भी शामिल है। शोध में उनकी विशेष रुचि है और वे ऐतिहासिक हस्तियों के बारे में अब तक अजानी कहानियों को साझा करना पसन्द करती हैं। मौजूदा पुस्तक की प्रेरणा उन्होंने बुकर टी. वॉशिंगटन की आत्मकथा *अप फ्रॉम स्लेवरी* से प्राप्त की जो बुकर की सीखने-सिखाने की लालसा को दर्शाती है और अपने हाथों से ईंट दर ईंट चिन कर स्कूल बनाने की कहानी बयान करती है।

**निकोल टैजल** *इन द गार्डन विद डॉ. कार्वर* तथा *फर्स्ट पीज़ टु द टेबल* की पुरस्कृत चित्रकार हैं। ऐतिहासिक रचनाओं को अपने पेन्सिल और जलरंगों से बने चित्रों से जीवन्त बनाना उन्हें अच्छा लगता है।



जब बुकर टी. वॉशिंगटन पढ़ाने के लिए टस्कीजी, अलबामा  
पहुँचे, तो उन्हें कई आतुर छात्र तो मिले पर स्कूल भवन  
नहीं! सो बुकर और उनके छात्रों ने तय किया कि वे खुद  
ही अपना स्कूल बनाएंगे - ईंट-ईंट जोड़ कर!

